रिकार्ड– यह कौन आज आया..... ओमशांति प्रातःक्लास 26.1.68

ओमशांति। रुहानी बाप बैठकर रुहानी बच्चों को समझाते हैं। बाप खुद कहते हैं मैं जब आता हूं तो किसको भी पता नहीं पड़ता है ;क्योंकि है गुप्त। तुम बच्चे भी हो गुप्त। गर्भ में भी जब आत्मा प्रवेश करती है तो प्रवेश होने का मालूम थोड़े ही पड़ता है। तिथी–तारीख निकल न सके। जब गर्भ से बाहर निकलते हैं वह तिथी–तारीख निकलते हैं। तो बाप की प्रवेशता की तिथी–तारीख का भी पता किसको नहीं पड़ता है। प्रवेश कब किया ,कब रथ में पधारा मालूम नहीं पड़ता। कोई को देखते थे तो नशे में आ जाते थे। समझा कुछ प्रवेशता है या मेरे में ताकत आ गई है। ताकत भी कहां से आई? मैंने खास कोई जप–तप आदि थोड़े ही किया। इसको कहा जाता है गुप्त। तिथी–तारीख कुछ नहीं। और सभी मनुष्य मात्र के तिथी–तारीख होते हैं। शंकर तो आता ही नहीं है। क्या वह सूक्ष्मवतन में सदैव है ही है वा कब से है? सूक्ष्मवतन की स्थापना कब होती है यह भी कह नहीं सकते। मुख्य बात तो है मनमनाभव। बाप कहते हैं हे आत्माओं , तुम मुझे अपने बाप को बुलाते हो कि आकर पतित को पावन बनाओ। पावन दुनियां बनाओ। बाप समझाते हैं ड्रामाप्लैन अनुसार जब आता हूं तो चेंज जरूर होनी है। सतयुग से लेकर जो कुछ पास हुआ वह फिर रिपीट करेंगे। सतयुग–त्रेता फिर जरूर रिपीट करेंगे। सेकेंड2 पास होता जाता है सम्वत भी पास होता जाता है। कहते भी हैं सतयुग पास्ट हुआ। देखा नहीं। बाप ने समझाया है तुम वह सब पास किया है। तुम ही पहले2 हमसे बिछुड़े हो। तो इस पर गौर करना होता है। कैसे हमने 84जन्म लिए हैं, जो फिर हूबहू लेने पड़ेंगे अर्थात् सुख और दुःख का पार्ट बजाना होगा। सुख–दुःख का खेल कोई बड़ी बात नहीं है। सतयुग में होता है सुख, कलियुग में होता है दुःख। नई दुनियां में बहुत सुख ,पुरानी दुनियां में है दुःख। मकान पुराना होता है तो कहां से छत बहेंगे ,कहां से कुछ होगा। फुरणा हो जाता है। इसकी हिम्मत करनी है। बहुत पुराना होता है तो समझा जाता है अब यह मकान रहने लायक नहीं है। नई दुनियां को तो ऐसे नहीं कहेंगे। अब तुम लायक दुनियां अर्थात् नई दुनियां में चलते हो। हर चीज पहले नई फिर पुरानी होती जरूर है। अभी यह तुम बच्चों के खयाल में आया है और कोई तो समझ न सके। खयाल में ही नहीं आता। गीता, भागवद,रामायण आदि सुनाते ही रहते। जो सीखते हैं उसमें ही बिजी रहते हैं। तुम,हम भी बिजी थे न अपने2 धंधों में। अभी समझते हैं बेहद के बाप ने हम बच्चों को कितना समझाया है। बाप कहते हैं यह पुरानी दुनियां खतम होनी है। अभी नई दुनियां में चलना है। ऐसे भी नहीं सभी चलेंगे। सभी मुक्तिधाम में जाय बैठे फिर तो प्रलय हो जावे। कायदा नहीं। बच्चों की बुद्धि में सारा चक्र है। तुम जानते हो यह पुरानी दुनियां और नई दुनियां का कल्याणकारी यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। अभी चेंज होनी है। बाकी शांतिधाम में चले जायेंगे। वहां तो दुःख–सुख की भासना ही नहीं। यह भी गायन है यज्ञ में विघ्न पड़े। सो तो पड़ते रहते हैं। कल्प बाद भी यह विघ्न पड़ेंगे। तुम पक्के हो गए हो। स्थापना,विनाश यह कोई छोटा काम थोड़े ही है। विघ्न किस बात में पड़ती है ;क्योंकि बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। तो इस पर अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। द्रौपदी की बात है ना। यह ब्रह्मचर्य पर ही खिट–पिट होती है। गालियां भी गीता सुनाने वालों को ही दी हैं। बाकी शास्त्रों में तो सभी हैं मनुष्यों की बनाई हुई बातें। वह सभी हैं भक्तिमार्ग के शास्त्र, जो कि पढ़ते ही आते हैं। अभी तुम समझते हो वह सब झूठ है। झूठ के कारण पाप बढ़ते ही जाते हैं। सतोप्रधान से तमोप्रधान बनना जरूर है। यह भी तुम समझते हो। सीढ़ी उतरनी होती है। दुनियां पुरानी होनी ही है। यह सभी बातें तुम बच्चे ही समझते हो। तो उनका सिमरण भी करना चाहिए। फिर दूसरों को समझाना भी है। पढ़कर टीचर बनते हैं। जरूर नालेज बुद्धि में है तब ही पास हो टीचर बनते हैं। फिर टीचर से जो सीखकर होशियार होते हैं तो गवर्मेंट उनको पास करती है। यह टीचर सिखलाने लायक है। तुम भी टीचर बनते हो ना। बाप ने तुमको टीचर बनाया है। एक टीचर

क्या कर सकते? तुम सभी हो रुहानी टीचर्स। तो बुद्धि में यह नालेज रहनी चाहिए। समाचार बच्चों ने सुना। जयपुर में स्पीकर आया तो नालेज पर मोहित हो गया। ज्ञान तो बिल्कुल ही एक्युरेट है मनुष्य से देवता बनने का। तो टीचर का मान रहा ना। आगे चलकर देखना क्या होता है। माया भी उनके पिछाड़ी ही पड़ेगी। मूंझेंगे पता नहीं। शास्त्र राइट है या यह बच्चियां राइट हैं। अभी बच्चों को राइट समझते तो माथा झुकाते हैं। लाइट भी देखते हैं। जितना तुम बाप को याद करते रहेंगे तो लाइट आते रहेंगे। मनुष्यों को सा. होता रहेगा ;क्योंकि आत्मा प्योर बनेगी ही याद से। फिर किसको सा. भी हो सकता है। बाप भी तो मददगार बैठा है। वह भी प्रवेश करेगा। बाप तो हमेशा बच्चों के मददगार होते ही हैं। पढ़ाई में भी नम्बरवार तो होते हैं ना। नाम नहीं लिया जाता है। हरेक को अपनी बुद्धि से समझना चाहिए कितनी धारणा होती है। अगर धारणा है तो ज्ञान समझाय दिखावे ना। यह है ज्ञान धन। रत्न। देते नहीं तो कोई मांगेगा नहीं कि इनके पास धन है। मनहूस भी होते हैं ना। दूसरों का भी कल्याण करना है। धन ले फिर दान करेंगे तो महादानी कहेंगे। महादानी ,महावीर ,महारथी बात एक ही है। सभी एक जैसे तो बन न सके। तुम्हारे पास कितने आते हैं। एक2 से बैठ माथा मारना होता है। वह लोग तो अखबारों द्वारा तो बहुत बातें सुनते हैं। तो चमकते हैं। फिर जब तुम्हारे पास आय सुनते हैं तो कहते हैं परमत क्या2 सुना? यहां तो बहुत ही फर्क है। एक2 को माथा को ठीक करने में कितनी मेहनत लगती है। यहां भी कितनी मेहनत लगती है। कोई महारथी हैं, कोई घोड़ेसवार, प्यादे। यह भी ड्रामा में पार्ट है। यह भी तो समझते हैं। आखिरीन में जीत तो हमारी ही होनी है। जो अंदाज कल्प पहले बना था वह जरूर बनना है। पुरुषार्थ तो बच्चों को करना ही पड़ता है। बाप राय भी देते रहते हैं। समझाने की कोशिश करो। ऐसे भी नहीं कि भाजी आदि वाले पास जाओ। पहले तो शिवबाबा के मंदिरों में जाय सर्विस करो। तुम पूछ सकते हो यह कौन है इस पर क्यों पानी चढ़ाते हो? तुम बच्चे तो अच्छी रीत जानते हो। कहते हो ना गया टांडे पर, मालिक हो बैठा। यह तुम्हारा दृष्टांत है। तुम जाते हो जगाने लिए। शिव के मंदिर में तो ढेर जाते हैं। काशी में विद्युत मंडली भी है। वहां से भी समाचार आया है म्यूजियम के ओपनिंग में विद्युत मंडली वालों को बुलाते हैं। तो लिखा है हमको जगदीश मदद लिए चाहिए। जानते हैं जगदीश तीखा है। संजय है ना। बुलाते हैं तो उनको खुशी होनी चाहिए हम लड़ाई पर जाता हूं। ऐसा निमंत्रण आये तो खुश होना चाहिए। और काम छोड़ पहले वहां। काशी में बड़े पंडित विद्युत मंडली के हैं, जो टाइटिल देते हैं। कोई अपने उपर भी टाइटिल लगाते होंगे। भक्तिमार्ग मे कितनी भी कोई होशियारी दिखावे इसमें रखा कुछ भी नहीं है। कितनी मेहनत करते हैं। कितने ढेर मंदिर हैं। यह भी एक धंधा समझ लिया है। कोई अच्छी स्त्री देखे उनको गीयता पढ़ना सिखाकर उनको आगे कर देते हैं। फिर जो कमाई होती है उनको मिल जाता है। यह है धंधा। बाकी कुछ भी है नहीं। ऐसे रिद्धी–सिद्धी बहुत ही सीखते हैं। तो निमंत्रण आया है जगदीश को। वह भी जानते हैं बाबा की बनारस में आंख है। जाकर देखना चाहिए क्या होता है। भल देरी है ;परंतु जाना तो पड़े ना। वहां होशियार की दरकार है। वहां अगर फेल होंगे तो कहेंगे ब्रह्माकुमारियां कुछ भी नहीं जानती हैं। इसलिए जाना भी चाहिए योद्धों को। वह भी योद्धे हैं ना। शंकराचार्य ने जाकर शास्त्रार्थ किया था। अभी तुम बच्चों को तो शास्त्रार्थ करना नहीं है। भक्ति के शास्त्र जिससे दुर्गति को पाते हैं उनका अर्थ थोड़े ही तुमको करना है। तुम तो जाकर बाप और रचना का परिचय देंगे। मुक्ति और जीवनमुक्ति दाता तो एक ही बाप है। उनकी महिमा करनी है। यह कहते हैं अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। मनमनाभव का अर्थ यह नहीं कि गंगा में जाकर स्नान करो। मामेकम् याद करो तो मैं प्रतिज्ञा करता हूं तुम्हारे जन्मजन्मांतर के पाप भस्म हो जावेंगे। रावण जब से आया

है अभी बच्चों को मालूम पड़ता है रावणराज्य में हम कितना छी2 बने हैं। आस्ते2 नीचे उतरते आये हैं। यह है ही विषय सागर। अभी बाप इस विख के सागर से निकाल तुमको क्षीर सागर में ले जाते हैं। बच्चों को यहां बहुत मीठा लगता है। फिर भूल जाने से क्या अवस्था हो जाती है। बाप कितना खुशी का पारा चढ़ाते हैं। इस ज्ञान अमृत का ही गायन है। ज्ञान अमृत का गिलास पीते रहना है। यहां तुमको बहुत अच्छा नशा चढ़ता है। फिर बाहर जाने से वह नशा कम हो जाता है। बाबा खुद फील करते हैं। यहां फीलिंग बच्चों को आती है। हम अपने घर जाते हैं। हम बाबा के मत पर राजधानी स्थापन कर रहे हैं। हम बड़े वारियर्स हैं। यह सभी बुद्धि में नालेज है जिससे तुम इतना उंच पद पाते हो। पढ़ाते देखो कौन है। बेहद का बाप एकदम बदला देते हैं। तो बच्चों के दिल में कितनी खुशी होनी चाहिए। यह भी दिल में आना है औरों को भी खुशी देवें। रावण का है सराप और बाप का मिलता है वरस। रावण की सराप से तुम कितना दुःखी ,अशांत बने हो। बहुत गोप भी हैं जिनके दिल में होती है सर्विस करने ;परंतु कलश माताओं को मिलता है। शक्ति–दल है ना। वंदेमात्रम् गाया हुआ है। साथ में वंदेपित्रम् तो है ही ;परंतु नाम माताओं का है। पहले ल0 फिर ना0। पहले सीता पीछे राम। यहां पहले मेल का नाम फिर फिमेल का नाम लिखते हैं। यह भी खेल है ना। बाप समझाते तो सभी कुछ हैं। भक्तिमार्ग का राज भी समझाते हैं। भक्ति में क्या2 होता है। जब तक ज्ञान नहीं है तो पता थोड़े ही पड़ता है। अभी तुम समझते हो पहले हम तो जैसे अनपढ़े जट थे। गंद में पड़े थे। अभी कैरेक्टर्स सभी का सुधरता है। तुम्हार दैवी कैरेक्टर्स बन रहा है। 5 विकारों से आसुरी कैरेक्टर्स होते हैं। कितनी चेंज होती है। तो चेंज में आना चाहिए ना। शरीर छूट जाये तो फिर थोड़े ही चेंज हो सकेंगे। बाप में ताकत है कितनी चेंज में लाते हैं। अनुभव में सुनाते हैं हम बहुत कामी, शराबी, कबाबी थे। हमारे में बहुत चेंज हुई है। हम बहुत खुशी रहते हैं। प्रेम के आंसू भी आ जाते हैं। बाप समझाते तो बहुत हैं ;परंतु यह सभी बातें भूल जाते हैं। नहीं तो खुशी का पारा चढ़ा रहे। हम बहुतों का कल्याण करें। मनुष्य बहुत दुःखी हैं। उनको रास्ता बतावें। समझाने लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। गाली भी खानी पड़ती है। पहले से ही आवाज है यह सभी भाई–बहन बनाते हैं। अरे, भाई–बहन का सम्बंध तो अच्छा है ना। तुम आत्माएं तो भाई2 हो ;परंतु फिर भी जन्म–जन्मांतर की दृष्टि जो पक्की हुई वह टूटती नहीं है। बाबा के पास तो बहुत पत्र आते हैं। लिखती हैं बाबा हमारे उपर बाप की कुदृष्टि रहती है। अभी हम इनसे कैसे छूटें? बहुत दुःख होता है। बाबा बचाओ। हमको भाई खराब करते हैं। द्रौपदी ने भी पुकारी ना पति के लिए। यहां तो भाई ,बाप ,मामा,चाचा,काका सभी दुःशासन बन जाते हैं। बाप कहते हैं यह कोई नई बात नहीं। कल्प2 हम यही बातें सुनते हैं। तो बाप समझाते हैं इस छी2 दुनियां से तुम बच्चों को ही जाना है। गुल2 बनना है। कितने ज्ञान सुनकर फिर भूल जाते हैं। सारा ज्ञान उड़ जाता है। काम महाशत्रु है ना। काम की आश पूरी न होने से फिर क्रोध में आ जाते हैं। कोई2 तो खुद जाकर पुलिस में रिपोर्ट करते हैं हमको ऐसे मारते हैं। इसमें महावीरणी चाहिए। कुछ सटका भी खानी पड़ती है। 21जन्म सुख पाने लिए एक जन्म सटका खाया तो कोई हर्जा थोड़े ही है। रीढ़–बकरियां मार खाती हैं। कोई तो फिर छी2 भी होती रहती हैं। ताकत नहीं। कहां बाहर निकल न सके। बाबा तो बहुत अनुभवी है। इस विकार के पीछे राजाओं ने अपनी राजाई गंवाई है। (मिसाल बताना) । काम बहुत खराब है। सभी कहते हैं बाबा यह बहुत कड़ा दुश्मन है। बाप कहते हैं काम को जीतने से ही तुम विश्व के मालिक बनेंगे ;पंरतु काम विकार ऐसा करा(कड़ा) है जो प्रतिज्ञा करके भी फिर गिर पड़ते हैं। बहुत मुश्किल से कोई सुधरते हैं। इस समय सारी दुनियां के कैरेक्टर्स बिगड़ा हुआ है। पावन दुनियां कब थी, कैसे बनी किसको भी पता नहीं है। इन्होंने यह राज–भाग कैसे पाया? कब कोई बता न सके। आगे समय ऐसा आयेगा तुम लोग विलायत आदि में भी जावेंगे। वह भी सुनेंगे तो .....ना। पैराडाइज कैसे स्थापन होता है। यह पैराडाइज कब था। कोई को पता नहीं है। आगे तुम कभी नहीं समझते थे कि यह स्वर्ग था। हम स्वर्ग के मालिक थे। अभी तुमको कितना मालूम पड़ गया है। तुम्हारी बुद्धि में है यह

सभी बातें अच्छी रीत हैं। तो अभी तुम्हारी यही लात और तात रहनी चाहिए। और सभी बातें भूल जानी हैं। बापदादा बैठे हैं। कोई भी बात में नाराज न होना है। बाप के पास आना चाहिए। बाप सभी दुःख दूर करने वाला बैठा है। तुम्हारे तो सभी दुःख दूर हो जाते हैं। तुम जानते हो हम ट्रांसफर हो रहे हैं अपने सुखधाम में। इसकी बहुत खुशी रहती है। लाटरी तुमको बहुत फर्स्ट क्लास मिलती है। तुमको अपनी सम्भाल आपे ही करनी है। अपना सुधारा करना है। तुम्हारी है ही योगबल की बात। बाप ही आकर योगबल सिखलाते हैं। तुम योगबल से विश्व के मालिक बन सकते हो। वह लोग आपस में लड़ते हैं। कितने एक/दो को ताकत दिखाते हैं। समझते हैं हम जीतेंगे। सभी आपस में लड़ेंगे तो जरूर। दिनप्रतिदिन जोर होता जाता है। समझते हैं बस अभी लड़ाई लगी कि लगी। उनके अंदर में होगा मैं जीतूंगा। मैं पावरफुल हूं। क्रिश्चियन ही आपस में हैं। उन्हों में ताकत बहुत है। क्रिश्चियन्स के पास ही बम्स आदि हैं। इस पर बहुत खर्चा होता है। उन्हों के पास तो ढेर हैं। कहानियां भी हैं। दो आपस में लड़े और मक्खन बीच में तीसरा खा गया। कृष्ण के मुख में चंद्रमा दिखाते हैं। बाप कहते हैं यह सारी सृष्टि की राजाई उनके मुख में है। राजधानी है ना बड़ी। विचार करो कल्प2 हम राजधानी पाते हैं। बच्चों को बड़ी खुशी अंदर में रहनी चाहिए। बाप की सर्विस करनी है। ड्रामा हमको जरूर करावेंगी (करावेंगे)। मुख से(में) सारे विश्व की बादशाही का मक्खन है। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। हम विश्व के मालिक बनते हैं। बाबा जरूर हमको बनावेंगे। अगर हम श्रीमत पर चलेंगे तो। नम्बरवार नशा रहता है। अभी तुम हो संगमयुग पर । तुम्हारा मुंह उस तरफ है। श्मशान के दर पर जब जाते हो फिर मुंह फिराय उस तरफ करते हैं। लात इस तरफ करते हैं। अभी तुम सभी वानप्रस्थ में जाने वाले हो। फिर नये घर में जाना है। शांतिधाम–सुखधाम को तुम ही जानते हो। तो तुम बच्चों को बहुत खुशी में रहना चाहिए। नशा रहना चाहिए नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। फिर उतरता जाता है। यह नशा और कोई नहीं है। यह है सुखधाम जाने का नशा। तुम जानते हो भारत कल क्या था? आज क्या है? हम ही सूर्यवंशी–चंद्रवंशी बने यह खेल है। अभी तुम चले अपने वतन की ओर। शांतिधाम–सुखधाम तुम्हारा वतन है। यहां तुम पराये राज्य में हो। अभी अपना राज्य मिलता है तो उसको ले लेना चाहिए। रोज तुमको प्याला मिलता है तो बच्चों को खुशी का पारा चढ़े ;परंतु ऐसे नहीं कि यहां नशा चढ़े और बाहर निकलने से ही खतम हो जाये। एक दिन आवेंगे जो तुम बहुत खुशी में रहेंगे। मिरवा मौत.....मिरवा तो जानवर मिसल ही मरेंगे। तुमको ज्ञान है। हम आत्माएं भी शरीर छोड़कर जाते हैं अपने घर। फिर लौटेंगे तब तक सभी ठीक–ठाक हो जावेगा। बच्चों को सदैव खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। हम अभी जाते हैं सुखधाम। फिर दुःख ,बीमारी आदि की बात ही नहीं। छी2 अक्षर सुनने की बात नहीं रहेगी। अच्छा।

यह है सत्य नर से ना0 बनने की कथा। जिसको सत्य अमरकथा भी कहते हैं। तीजरी की कथा भी कहते हैं। इन नेत्रों से तो भल देखा ;परंतु तीसरे ज्ञान की नेत्र से अपने शांतिधाम–सुखधाम को याद करते रहो। ऐसे कब कोई सिखला नहीं सकता। बाप ही आकर कहते हैं बाप को याद करो और वर्से को याद करो। शांतिधाम और सुखधाम को याद करो। बाकी इन आंखों से जो कुछ देखते हो उनको भूल जाओ। बाप नया घर बनाते हैं तो फिर पुराने से दिल हट जाती है ना। यह भी ऐसे है। अभी बाकी थोड़ा समय है। इसलिए अपने शांतिधाम–सुंखधाम को याद करो। सिखलाने वाले बाप को याद करो तो वहां पहुंच जावेंगे। फिर जितना जो याद करेंगे। इस पुरानी दुनियां में पराया राज्य में तो बाकी थोड़ा समय है। यह कोई अपना राज्य थोड़े ही है। यह तो पराया राज्य है। रावण का सारी दुनियां पर राज्य है ना। सिर्फ लंका में नहीं। सारी दुनियां मे रावण राज्य है। इसको बेहद का फारेन का राज्य कहा जाता है। एक2 मनुष्य में इन 5भूतों की प्रवेशता है। अच्छा, रुहानी बच्चों को रुहानी बापदादा का यादप्यार गुडमार्निं और नमस्ते।

: शिवबाबा याद है :